युग निर्माण सत्संकल्प

पं० श्रीराम शर्मा आचार्य

युग निर्माण अभियान जिसे लेकर गायत्री परिवार निष्ठा और तत्परतापूर्वक अग्रसर हो रहा है, उसका बीज युगऋषि वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं० श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा विनिर्मित यह **सत्संकल्प** है। यह हमारे प्रयासों का एक सुनिश्चित प्रारूप-घोषणा पत्र है, जिसके आधार पर हमारी सारी विचारणा, योजना, गतिविधियाँ एवं कार्यक्रम संचालित होंगे। इसका प्रत्येक सूत्र व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र को आमूलचूल बदलने की आधारशिला के रूप में रखा गया है। **एकता, समता की सर्वांगपूर्ण रूपरेखा- वसुधैव कुटुम्बकम् की समग्र परिकलपना इसमें की गई है।** इस घोषणा पत्र को हम ठीक प्रकार से समझें, उस पर मनन और चिंतन करें तथा यह निश्चय करें कि हमें अपना जीवन इसी ढाँचे में ढालना है। दूसरों को उपदेश करने की अपेक्षा इस संकल्प पत्र में आत्म निर्माण पर सारा ध्यान केन्द्रित किया गया है। एक-एक अच्छा मनुष्य मिलकर ही अच्छा समाज बनेगा।

युग परिवर्तन के लिए जिस अवतार की आवश्यकता है, वह पहले आकांक्षा रूप में ही अवतरित होगा। इसी अवतार का सूक्ष्म स्वरूप यह **युग निर्माण सत्ससंकल्प** ही है।

नवसृजन के लिए संकल्पित युग शक्ति का स्वरूप

युग निर्माण के सूत्र

नित्य पाठ करें	धीरे-धीरे पढ़ें	समझ कर पढ़ें	श्रद्धापूर्वक पढ़ें

✷ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।

✷ शरीर को भगवान् का मंदिर समझकर आत्म-संयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

✷ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।

✷ इंद्रिय-संयम, अर्थ-संयम, समय-संयम और विचार-संयम का सतत् अभ्यास करेंगे।

✷ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

✷ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्त्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।

✷ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।

✷ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।

✷ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

✷ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।

✷ दूसरों के साथ वह व्यवहार न करेंगे, जो हमें अपने लिए पसन्द नहीं।

✷ नर-नारी परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।

✷ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान,पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

✷ परम्पराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।

✷ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने औरनवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।

✷ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान् रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।

✷ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है, इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनायेंगे, तो युग अवश्य बदलेगा।

✷ हम बदलेंगे-युग बदलेगा, हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

विचार क्रान्ति अभियान, गायत्री तीर्थ - शान्तिकुंज, हरिद्वार (उत्तरांचल) भारत

☎ (01334) 260602,260309 e-mail: shantikunj@awgp.org www.awgp.org